nt>

Title: Reported suicide by a Scheduled Caste employee of LIC alongwith his family members, due to harassment by his seniors.

श्री रतिलाल कालीदास वर्मा : अध्यक्ष महोदय, मैं सदन का ध्यान एक दलित कर्मचारी की दर्दभरी दास्तान की ओर दिलाना चाहता हूं। एलआईसी में नौकरी करने वाले असिस्टैंट इंजीनियर श्री दिनेशभाई गणपतभाई परमार को दो साल पहले नौकरी से सस्पैंड कर दिया गया। उस पर गलत आक्षेप लगाए गए। वह हर आक्षेप में निर्दो छूट गया, लेकिन फिर भी उसे नौकरी पर नहीं लिया गया। इतना ही नहीं, उसके वरिठ अधिकारियों ने उसे इतना परेशान किया, इतना मजबूर किया कि अंत में उसने अक्टूबर महीने में आत्महत्या कर ली। उसने खुद ही आत्महत्या नहीं की बल्कि उसकी बहू मधु, जिसकी उम्र 40 साल थी, उसकी 19 साल की बड़ी लड़की पायल, जो कालेज में पढ़ती थी और 17 साल की लड़की निशा, जो ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ती थी, ने भी आत्महत्या की। उनकी बात किसी अधिकारी ने नहीं सुनी। मरने से पहले उन्होंने 12 पेज की चिट्ठी लिखी जिसमें लिखा कि इन अधिकारियों ने हमें मरने के लिए मजबूर किया। उस चिट्ठी पर सबने साइन भी किए। वहां के डीसीपी श्री शमशेर सिंह ने कहा कि इसे डाइंग डिक्लेयरेशन माना जाएगा। उन्होंने चिट्ठी में जिन अधिकारियों के नाम लिए, ...(व्यवधान)...(कार्यवाही वृत्तान्त में सम्मिलित नहीं किया गया।)

अध्यक्ष महोदय : किसी का नाम नहीं लें, नाम रिकार्ड में नहीं जाएगा।

...(व्यवधान)

श्री रतिलाल कालीदास वर्मा : मुझे दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि चिट्ठी में जिन अधिकारियों का नाम था, हाई कोर्ट ने उनको जमानत नहीं दी। लेकिन एलआईसी की ओर से उनको प्रमोशन दी गई। इससे हिन्दुस्तान में यही मैसेज जाएगा कि दलितों पर अत्याचार करो, उन्हें परेशान करो, उन्हें आत्महत्या के लिए मजबूर करो और प्रमोशन पाओ।

माननीय वित्त मंत्री जी यहां बैठे हुए हैं। गुजरात में रैलियां निकलीं, धरने हुए। कांग्रेस के मित्रों ने धरने दिए। भाजपा और सामाजिक संस्थाओं ने भी धरने दिए। मैं अर्ज करना चाहता हूं कि आप मेहरबानी करके ऐसे अधिकारियों को प्रमोशन से वंचित रखें और उचित कदम उठाएं ताकि भविय में किसी कर्मचारी को आत्महत्या के लिए मजबूर न किया जाए।

मेरी मांग है कि उनके परिवार को उचित मुआवजा दिया जाए और यथासंभव जो सहायता हो सके, दी जाए। इसी के साथ मैं पुनः प्रार्थना करना चाहता हूं कि उन्हें उचित न्याय दिलवाएं।â€¦(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : उनको भेज दीजिए।

...(व्यवधान)

श्री रतिलाल कालीदास वर्मा : आजादी के 56 साल बाद भी दलित अधिकारी आत्महत्या करने के लिए मजबूर किए जाते हैं - यह हम सबके लिए शर्म की बात है।â€¦(व्यवधान)